

रुनीदि रुनी रुनीचतुस्य श्रुयत्सयनं वा रुनीना रुयसनीना
 युथमयनाना कूर्चलुसमसिद्धिदं रुठवलिगृह्णं २ ब्राह्म ॥ यानि
 निजं मरुका लायवलिगृह्णं २ ब्राह्म ॥ मेरुका न ॥ नि ३ यो मा काला
 यवलिगृह्णं २ ब्राह्म ॥ नि ४ यो मा काला
 याला यवलिगृह्णं २ ब्राह्म ॥ नि ५ यो मा काला
 तगा रुठका दिवलि ॥ युवा दिवलि ॥ नि ६ यो मा काला
 रुठका दिवलि ॥ युवा दिवलि ॥ नि ७ यो मा काला

ॐ मांयूययदीय अलिवलियसिर्तं गृहं ममगु नागय २ सं
वोथोसिद्धि ददस्वमदं २ वलिगु दं २ स्वाहा ॥ निज यरुवरु मयवने
वायूययिभय कलावीसमरुहि नवायम हाग्मग्मनाधियतयस्व
गकि सहिगायस्वयनिवा नाय ॐ मांयूययदीय अलिवलियसि
र्तं गृहं ममगु नागय २ सर्वार्थसिद्धि ददस्वमदं २ वलिगु दं २ स्वाहा
॥ निज यवलवयवनेदक वयिभय हीमा रुमरुहि नवायमदं
ग्मग्मनाधियतय गकि सहिगायस्वयनिवा नाय ॐ मांयूयय
यदीय ४ अलिवलियसिर्तं गृहं ममगु नागय २ सर्वार्थसिद्धि द

दस्वमदं २ वलिगु दं २ स्वाहा ॥ निज गगमरुद गंनेवीग्मन्ययीभयः
हीमनूयमरुहि नवायमरुग्मग्मनाधियतयस्व गकि सहिगायस्व
यनिवा नाय ॐ मांयूययदीय अलिवलियसिर्तं गृहं ममगु नागय २
सर्वार्थसिद्धि ददस्वमदं २ वलिगु दं २ स्वाहा ॥ निज दं दं अद्वयीभ
य नकयाद मरुहि नवायमरुग्मग्मनाधियतयस्व गकि सहिगायस्व
यनिवा नाय ॐ मांयूययदीय अलिवलियसिर्तं गृहं ममगु नागय २
नागय २ सर्वार्थसिद्धि ददस्वमदं २ वलिगु दं २ स्वाहा ॥ निज उं उं उं
द्वयीभयमय रातून मरुहि नवायमरुग्मग्मनाधियतयस्व गकि

सहि नायस्य विवा नाय ॐ मायूष्ययदीय ४ अलिवलियिगि रं गुं
क्रं २ ममग फनालय २ सर्वाथेसिदि ददस्वमदं २ वलिंगुद्रं २ वाह
॥ ॐ निरुगु कादि वानि ॥ नगाययागदि विज ४ अमिता मं रुववा
यवेकायलीसहि नायययाग रुगाधियुय ॥ ममीयसगलयावेवा
य ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज कं नू नू नू नव
यमोह ॥ श्रीसहि नाय वनू रुगाधियुय सागमयसगलयावेवा
वानाय ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज ववव

रुववाय कोमारीसहि नाय कानरुगाधियुय सागमयसगलयावेवा
वानाय ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज टं कादि
रुववाय वैष्णवीसहि नाय जूह हास के ॥ विज ४ अमिता मं रुववा
नयविवा नाय ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज न
उन्नरुह रुववाय वानाहीसहि नाय रुयनिरुगाधियुय सागमयस
गमयविवा नाय ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज
यं कयाल रुववाय ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज
मयसगलयावेवा नाय ॐ मायूष्ययदीय नव ई वलिं गुद्रं २ वाह ॥ विज

ला निज यं ही वल रु न वा य वामू ल स हि ता य न का मु कु र
 य सा ग य स ग ल स्य नि वा ना य ॐ मा य य य दी य न व व लि
 र वा ला नि ज स स ल न रु न वा य सा ल ल को स हि ता य द द
 क रू ग यि य न य सा म य स ग न स्या नि वा ना य ॐ मा य य य दी
 य म व य व लि गृ क र वा ला ॥ ॐ ति आ न ना मी दि वे लि ॥ ॐ न व
 धा न म मा य व न द वी म ल गी व क्क य ली वि ष्व व लि गृ क र वा ला ॥
 ॐ ज धा न ज मा य व न द वी म ल गी मा रु ग्य वी वि ष्व व लि गृ क र वा
 ला ॥ ॐ ज धा न ज मा य व न द वी म ल गी को मा नी वि ष्व व लि गृ

क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ अद्या न जमा धवन दवी मल श्री वेष्म वी विष्णु वलि गृ
 क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ अद्या न जमा धवन दवी मल श्री वा ना ही विष्णु वलि
 गृ क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ अद्या न जमा धवन दवी मल श्री ॐ नमो यती विः
 ध वलि गृ क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ अद्या न जमा धवन दवी मल श्री वा मूष्म विः
 ध वलि गृ क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ अद्या न जमा धवन दवी मल श्री महा लः
 विष्णु वलि गृ क्रं २ स्वाहा ॥ ॐ निवृत्ता ध्या दि वलि ॥ नि ७ ज या
 ध वलि गृ क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ विजया ये वलि गृ क्रं २ स्वाहा ॥ नि ७ अ जि

उदयधाम आनिनी गलसं कला ॥ डाका नादि कथयि भक्त यसात्र
 दकिता ॥ डावधी धाउसं दाहादि भसु विदि भसुव ॥ महीया तलव
 कां धुं सर्व भानु न भुव ॥ आनिनी या गयू का मां सम निष्ठु कि साध का
 ॥ दीने के मी मूदी न द्या सत्य निष्ठु कि दवना सिद्धा भ्य दू दका बा र्या सा
 धका दि नि सा यिन ॥ नग न वा थ ग्राम वा अट द्या वा स नि द्धु न ॥ वा र्य
 कू कू य क कृ कृ वा न्म न्म न मा ट म धु ल ॥ नाना नृ प ध न न्य यि त ट जा
 वि वि धा नि च ॥ नृ च सर्व रथि सुरु द्या दलि गृ कृ लु सै र्दु र्ग ॥ जन न्म गत
 स्य र्दु र्ग र्ग स सर्व म न हू ल य द ॥ पाल द्य य नी या क म य न्क वि द्या मि ॥

[illegible]

[illegible]

गणेश उग मन्त्र दाना कुरु कुरु अजनादि महा कुरु दयालाय वाल गुरु
 ब्राह्मण ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वलि ॥ मुनि चतुर्धर मरुता सोदूमस्वी सुमस्वी वला ॥ नवनीयम
 शायनाशी म्याही मा मरुता वला ॥ जयाच विजयाच वज्र जिनाच यन
 जिना ॥ मरुता केटा विनेयाही शुक्रा म्मा म्मा म्मा म्मा ॥ जामरुता नीम
 हा नीच दूधाली शुक्र नीवनी ॥ विद्यासी यथा हा नीच अगनी म्मा म्मा
 नीली ॥ रुद्र काली म्मा रुद्राच रुद्राही मा म्मा रुद्रिका ॥ द्वाविंश म्मा म्मा
 ॥ कर्तिकाया लक्ष्मी विनी ॥ द्वाविंश म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा

[illegible]

निलयहमविंशतिवयू श्रीमन्मन्त्राय नमः ॥ ३ ॥ काष्ठीलयाय नमः ॥ ४ ॥ द्रविडमलय ॥ ५ ॥ ब्रह्मवर्णकूल
श्रीनाथरुद्रकेशुकुण्डनसिखिनजक सिद्धिदण्डहास । कीर्तिनिधि
द्रविडकाट हिमनिनिगिरवलः काश्चिदण्डययाग सोनायुमध्यदः
लहृगुगुननेगलेकीगलकामकेवा ॥ ७ ॥ कर्पूरकौकिलवाम
गंधयूनवने कलिकुट्टिकलिगिरिस्थायाममध्यसूनवनेगयन
गङ्गावायुमलय । थानिजामन्दजांवाविविधवृधनर्तामागनका
सूतिदासिदाउष्ट्रीसूतिदाविविधवृधनर्तादिव्यसिद्धिददले

॥ ४ ॥ स्वर्गं वा मनुसिद्धिं यन्नयन्नविंसर्गं स्वर्गनिर्वाहार्थं वा मनुसिद्धिं
 विपुलां वलियलिङ्गयैरुक्तं सर्वविद्या। दीर्घायुश्च कविज्ञानिधि
 नमगुहिका यादृका कामसिद्धिं सर्वोक्तिनाददत्तुं जलिवलिविनिग
 रं नवानान्ययुक्ता ॥ ५ ॥ दुष्टं लोभाविमात्रिगुरुगणगणलविद्यु
 त्यातु नलवा नाज्ज्वा नज्ज्वा विद्युत्तयुक्तं व्याधितं वसं मू
 र्खं रूढकान्यनि रूढरूढरूढसिर्गेष्वयैकियिवनिःपृथगनि
 माणा किलिमिलिविकिलिकीनराया निरन्तरं ॥ ६ ॥ साधुका काम
 धाय नवगयसहा रूढं कोननादाडहि। डालीलकं ज्ञानं न

नदया विन्दु नोदय गता । रुद्र रुद्र कान्तु नृधिन वहा जडि
 तान नम मम । मग्न्या लो कया लो गस यम नृग यो धि द नान्य भूक
 ॥ ८ ॥ विस्थानो नृदे गता ॥ सव दिगं उगिव रौ वं स सिद्धि नृया चा
 ॐ रुद्र नृया दग दिगिय क द वृधुला स्या य सिद्धा ॥ अ क गि नि थ
 यूका उदधि कूल वधि माननी विन्दु दहा डा धान नि थ तं कूल
 म कूल मया था ग व क य वि द्या ॥ ९ ॥ रुद्रा श्रुत सयनी अय न व
 नय नो ना दि रुक्मा विरि था दि द्या ला कया ला सकल वन गग गी
 पञ्चाम नी ला स्या ॥ गी क १० वर्य यनी जिह्व वन जननी म प्यो यी १०

गमाया त्रिकुट्टा दददवी निवयथ गमना कालमः ॥ १० ॥
नामाया कट्टि काट्टि कट्टि लवगना मनुयी अययी ॥ ददद्वि अ सिद्धिया
मिगदनना वि यना मधुलं यूययी ॥ कामाया कोको अया वकक
लवि विभीसी कि गोक्षान सिद्धः यागाल द मिस्त्र न विजय वस अमा
कल अ कलाया ॥ ११ ॥ उरि उरु उरु अरु गटि गटि गनय गृहय न
समस नोयी द काल वीर्ज दल लजलि वा धुधु मा संयद कलाया स
उरु वाम नोली उल नक मरुया सकि गो सयु रुद संपुष्टा न अक
विमेल कल गगाथ अनन स ममा ॥ १२ ॥ नमो नमो कुरुद विमव

हन्वात्मायाश्कायस्थे सुवाले ७ नमः ७ लनावात्मा

四

२३

जीवलि ३

वा

मिथा

विष्णुसहस्रनाम

३

वान

धवन ऊवसे

वि

१ गनूयका

११५

三

25

श्रीक

(५)

भा

यवनयवन

|| 1534 1535

1853年12月15日

Handwritten text in Devanagari script.

८५ वलीशी योगीजीवाले

ASHA ARCHIVES

श्रीगुरुदेव

ASHA ARCHIVES

3000

दूकां विजडकामूकडडदि विनुसुसवेणी हृदयाययादकां ॥ ॐ
वलिमिदि ॥ ॥ गंगाकोटि कायैयदीयनेवडडययास्वयन ॥
॥ भूय ॥ विजगुनीगुगुनीवकयुनं मृगनारुया ॥ धूयवायसवेया
पूयायैयतिगुयुना ॥ दीय ॥ विमृयकासमहादीयसवेयतिमिनाय
॥ सवाक्राशं नवीजातिदीयायैयतिगुयुना ॥ नवड ॥ विजगुनीमहा
नेसंदिद्यं नमेषुडिसमन्यन ॥ जरुनेवयादिनं एयं गृहानेयनमं
॥ ॥ रुलनामने ॥ विजगुनीरुलादिनामूलं ॥ ॐ यंकनाससवेय
अवडादिम्वजासीनरुलायैयतिगुयुना ॥ ॥ ॐ रुलपुय

गामूलयैयदीययनाना यकुषादि ॥ मउरगववदू विधियकानादि
यअमृननेवडानेकल्यडयडादिना ॥ अगगधादि ॥ जजसकल्य
अदिदममु ॥ ॥ लक्ष्मीनायां ॥ ॥ गंगाजाय ॥ ॥ रुयया ॥ विजगुनी
॥ ॥ वटकया ॥ विजगुनीदी ३ वटक ॥ विजगुनी ३ गलयति ॥ विजगुनी ३
॥ ॥ महेविद्या बालुनीयायुज ॥ मूलस ॥ ॐ रुदवलि ॥ ॥
॥ विजगुनीदिगुयुनायैयतिगुयुना ॥ नमं कनं जयै ॥ सिद्धिरुवगुम
॥ ययैयदीययतिगुयुना ॥ जयगुहानमाला ॥ ॥ ॐ निजाय ॥
॥ ॥ ॥ विजगुनीययुवाव ॥ यमायाजायमायानयादि ॥

अथानेक शब्द न क
ग्यामानकायादि ॥ आधानादू द्वैवकायादि ॥ नमास्तु नमहा माय
यादि ॥ श्रीसर्वनाम्नः ॥ यथा ॥ किं मेने ॥ रुमास्तु नी ॥ अरुगन्धवि
॥ ॐ तिस्ता ॥ ॥ समयस्तु य ॥ खोज ना का अक्षसद्यवक्ष्य
य ॥ मलिदवा ॥ द्रव विन्दु विय ॥ तगाचामूलवृक्षा ॥ धने भाचार्य
नैनयेल्लदि ॥ विजयतिथिगाथादि ॥ वाकार्त्तकूर्या ॥ दिव अहि
योक् ॥ चन्द्रन सिद्धन तगुणः मोहनी देवसेन ॥ दिव जा मि
वी दुः ॥ आचार्य ज हिषक ॥ चन्द्रन सिद्धन मोहनी सगुण ॥
आगीवीद ॥ यास्त्रीका य ॥ नासिया ॥ सूर्यसाहि ॥ . ॥

अथ समय ४

[illegible]

[illegible][illegible]

नादि ८ ॥ विंजयया म्नाये यायू ॥ निउयता म्ना नाये यायू ॥ ध्यानं ॥
 वृंती ता ॥ त्यज दे ल त्या मा वी ल रुमा व गु ठितं ॥ सव कुश द
 ही न जी व रु ला द्या द (ही रु जा ॥ (म रु ना य य माला रि ॥ यु त सि
 हा स न स्मि ता ॥ ज न कं नृ पू न क म्या क क्री ट म ख ना स्मि तं ॥ ग क
 क नो द वी तं च क (ए रु ने च वा स की ॥ कू लि कं क लु थि या द्या
 कं कू र्म कू लु ल म लु तं ॥ रु म (य मं स्मि तं य द्म म रु य द्म
 ग यि व च ॥ वा कू द (यू स द्म म रु म रु टि म लु तं ॥ वि कः

कमलमाला दक्षिण दक्षिण हितं ॥ जलमं वा दक्षिणं वा
 उच्छिष्टमवच ॥ मधुश्च दक्षिणं वा जलमं वा दक्षिणं वा
 प्रत्यक्षं वा लं च धान्यं जलमं वा दक्षिणं वा ॥ यीनं स्यां यीनं वा
 जोरिनी यनमं धनी ॥ वलुमाला गलवद्धा आवत्येयावलं
 विनी ॥ इन्द्रकी कृष्णिका सच्येया यथेया ॥ धान्यं वा
 मायुः ॥ धिः ॥ आवलं नादियथा कं ॥ अक्षरं ॥ ३ ॥ त्रिंशो
 धिः ॥ धिः ॥ तमाः गवतिर्युं कृष्णिका यथेया ॥ ३ ॥

लामजुदा नाम मूखी कैं कैं किं लि र वि च्च मूं धी या द को धो
 धूं धी की वि ॥ ३ ॥ एव वलिं ॥ या नि मूं धी ॥ या ॥ वनि धी धि उ
 धूं धी धी उ न ॥ एव वलिं ॥ विं ज सं जी धी ॥ वनि द्द द या य
 य धी त म ॥ विं ज क रं कि ती मा रु मा य नि न स व न्य त न म ॥ वि
 ज अ ति ध्व नी अ ति नू यि धी हि वा यि दी र्यं त म ॥ विं ज रु स र य न म ॥
 त न्द क व वा य धू र्यं त म ॥ विं ज रु स्कर न गाय न व डं त म ॥
 विं ज व नू धा दि वी अ क्ता य उ द कं त म ॥ विं ज अ क्ता य रु द्ध त म ॥
 विं ज रु ज न रु व लि धा क मा य अ लि वा रं त म ॥ ॥ ज. य. ॥

हं रे हं रे ॥ ११२० ज ५ १०० ॥ ॥ ॐ ति वा न वृ ज ॥ ॥
 (जा) दि ए व न्द्रा व नि ना न न धुः दी अ मि ना धा द्द द य
 ज म धु ॥ अ रु स ना धी धू उ रु य ध्व र्म (ध ध र्म स ज
 ना ति ध न स वृ किं ॥ ख मा ने की ॥ ध व अ न म धी वि य ॥
 नि रु रु श न स न धा रु न म ना ॥ सा न वा र्व यो रु न
 स ना ॥ वि वा सा र्व यो रु ने श ना ॥ अ न स र्थ ग गाल
 धी अ गाल धी य ना ह नि ॥ अ ना ह वि ग ना ध मः

ननाधिमो नगाऊय ॥ ॥ ॥ य (दे) जी यूव मा
 एउ रुव पि सु ज नि न द कि (॥) न्यौ न (॥) सि रिया
 नाद वी कू ऊं धी उ व न न न न ना पा सि मा मा
 ये मे (॥) ॥ य (॥) जी ती यु सि द्वा रुव पि सु न ले
 ना म रु ना न (॥) ये दे वी म (॥) ध (॥) धा हा न के थ
 दि रु व न न नी ति य न ग न्ति म वे ॥ ॥

दो ८

ए ला का ति दू न व रु उ व कू सु म ति रु आ ति सि
 न न व रु सा रु द द रु की आ सि रु ले के
 धी नी वि रु क यी व रु की । मि रु रु सी स्य ड य म
 क न ज य स न स वी सि र्थ की नी प न्ना ये वू न्ना यी
 ॥ ॥ ॥ स क ल रु य रु ना रु रु वी न स म
 तीर

वि ३
 सुभाषासात्रयूजउद्वया। विजयमात्राययायू। विजयिकासा
 नययायू। विजयवन्तुसूर्यामिनययायू। विजयन। विजयपञ्चवक्त्र
 चण्डकाक्षं सर्वारुननद्विभित्तं। चण्डसूर्यामिनयननिवेष्टा
 त्तमकंरुजं। यानयाप्रज्ञानमूर्धा। विष्णुनयस्ककंकलं। विजय
 संसिद्धिविद्याधर्मं सर्वानन्दमूर्ध्वकंकर्गं॥ यानयूर्ययायू
 ॥ श्रीः॥ यनायासादविद्यायायादकायूजयामि॥ ३॥ ॥
 देवर्षिगृहं॥ २॥ ॥ मूर्धा॥ ॥ ॥ ति यनायासायदुर्ध्वामा

ययूजा ॥ ॥ रंगया ॥ ॐ कौंटी स हृदयादित्या ॥ ॐ कौंटी
 हं स' २ वद ॥ ॐ हृदयादित्या ॥ ॐ कौंटी
 य सूर्याय नमः ॥ ॐ ॥ ॐ कौंटी ॥ ॐ कौंटी
 कदायूजा ॥ ॐ कौंटी हृदयादित्या ॥ ॐ ययूजा ॥ ॐ कौंटी
 ॥ ॐ कौंटी कौंटी कौंटी ॥ ॐ कौंटी कौंटी कौंटी ॥ ॐ कौंटी
 वलि ॥ ॐ कौंटी कौंटी कौंटी ॥ ॐ कौंटी कौंटी कौंटी ॥ ॐ कौंटी
 ॐ कौंटी कौंटी कौंटी ॥ ॐ कौंटी कौंटी कौंटी ॥ ॐ कौंटी

ॐ श्रीं बुधं कौंभं ह्यगालातवासिनीस्य ४८ स्वर्गं स्वर्गा ॥ नमः धनका वं
आशु लोकस्य आमन्त्र ॥ ॥ कौंभं लक्ष्मिकाय नमः ४॥ नमः स्वायं प्रवृत्त नित्य ॥
३५ नामस्य स्यात्स्य स्यात्स्य विधि ॥

ॐ कौंभं बुधं
श्रीं बुधं ॐ ह्य
श्रीं बुधं वगया
श्रीं बुधं दकाय
जयामि ॥ ॥